शुतुरमुर्गी चरित्र का सच

डॉ. किशोर पंवार

कहावतें व मुहावरे हमारे सदियों के अनुभवों का निचोड़ होती हैं। इनमें से कुछ जो बारीक अवलोकनों से जन्मी हैं में वैज्ञानिक तथ्य भी छिपे रहते हैं; जैसे खरबूजे की तरह रंग बदलना, डर से पीला पड़ना और शर्म से लाल होना। लेकिन कभी-कभी इनमें चूक भी हो जाती है। ऐसी ही एक गलती 'शुतुरमुर्गी चरित्र' के साथ हुई है। इस कहावत का मतलब है - खतरे के समय शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर छिपा लेना और समझना कि चूंकि अब मैं किसी को नहीं देख सकता तो मुझे कोई क्या देख पाएगा। यह विचार और इससे जुड़ा अवलोकन बहुत पुराना है। यह भ्रम सम्भवतः प्रसिद्ध प्रकृति वैज्ञानिक प्लिनी के समय से चला आ रहा है।

शायद प्लिनी ने अवलोकन में पर्याप्त सावधानी नहीं बरती जिससे ऐसी गड़बड़ हुई। प्लिनी ने देखा होगा कि घोंसले पर अपने अण्डों को सेने के लिए बैठा शुतुरमुर्ग किसी सम्भावित खतरे की प्रतिक्रिया स्वरूप अपना सिर नीचे झुका लेता है। ताकि झाड़ी से वह नज़र न आए। चूंकि उसका शरीर लगभग घास के रंग का होता है इसलिए वह आसपास के पर्यावरण में घुलमिल जाता है और आसानी से दिखाई नहीं देता है। यही देखकर प्लिनी ने यह बात कही होगी जो कालान्तर में एक कहावत बन गई।

जीवित पक्षियों में शुतुरमुर्ग शायद सबसे बड़े आकार की (लगभग ऊंट के बराबर) चिड़िया है जो हमारी कल्पना में फिट नहीं बैठती। हालांकि पक्षियों के प्रमुख गुण अर्थात उड़ने से तो यह वंचित है लेकिन अपनी शक्तिशाली, लम्बी टांगों से यह 60-65 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से सरपट दौड़ पाती है। आकार, रंग-रूप और दौड़ने के इस गुण के कारण इसे कैमल बर्ड भी कहा जाता है।

कुछ वर्षों पूर्व शुतुरमुर्ग लगभग सारे अफ्रीका में पाई जाती थीं। किन्तु अत्यधिक शिकार के चलते अब ये मध्य और दक्षिण अफ्रीका के पालनकेन्द्रों में ही प्रमुखता से मिलती हैं। यहां इन्हें इनके सुन्दर पंखों के लिए पाला जाता है। नर के पंख बहुरंगी व लुभावने होते हैं जबकि मादा भूरे पंखों के कारण सूखी झाड़ी जैसी दिखती है। घास के मैदानों में छिपने पर इसे आसानी से पहचाना नहीं जा सकता। अपने पर्यावरण के प्रति यह एक तरह का अनुकूलन है।

शुतुरमुर्ग एक बहुसंगिनी चिड़िया है अर्थात इसका नर कई मादाओं के साथ जोड़ा बनाता है। भव्य प्रणय प्रदर्शन क्रियाओं के बाद समागम होता है। नर घोंसला बनाता है जो 30 से.मी. गहरा रेत का एक बड़ा सा गड्ढा होता है। इसमें टहनियां बेतरतीब-सी पड़ी होती हैं। नर मादा दोनों मिलकर अण्डों को सेते हैं। अण्डा लगभग नारियल के आकार का होता है। मुर्गी के अण्डे से तुलना की जाए तो 24 मुर्गी के अण्डों के बराबर इसका एक अण्डा बैठता है। अफ्रीका के आदिवासी लगभग सवा किलो वज़न वाले इस अण्डे के मोटे व कड़े खोल का उपयोग पानी भरने के बरतन के रूप में करते हैं। अण्डों से 42-45 दिन बाद मुर्गी के आकार के चूज़े निकलते हैं।

इसके भोजन में फल, अनाज, पत्तियां, कीड़े, घोंघे व छिपकलियां शामिल हैं। इन्हें पीसने के लिए यह यदा कदा कंकड़ पत्थर भी निगलता रहता है। इसकी इस आदत के कारण एक अन्य भ्रम यह भी है कि यह कुछ भी अपचनशील पदार्थ खा लेता है। कील, धातु, कांच से लेकर रेल की पटरियां तक। यह पूर्णतः अतिश्योक्ति है। हालांकि यह सच है कि अन्य पक्षियों की तरह इसके भी दांत नहीं होते जिससे यह अपना भोजन चबाए बिना निगल लेता है। इस अचबे खाने को पचाने के लिए उसे बारीक पीसना ज़रूरी है। इसलिए यह कंकड़-पत्थर खाता है परन्तु रेल की पटरियां नहीं। हालांकि बन्दी अवस्था में इसके पेट में पत्थर की जगह कुछ धातुई सामग्री देखी गई है।

शत्रु को देखकर रेत में सिर छिपाने का किताबी वर्णन इसके चरित्र से बिल्कुल मेल नहीं खाता। सच तो यह है